International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्शों का शैक्षिक आचरण, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता के विकास पर प्रभाव का एक विश्लेषणात्मक अध्ययन : राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के विशेष सन्दर्भ में

An Analytical Study of the Impact of Sri Guru Nanak Dev Ji's Economic and Moral Ideals on Educational Conduct, Commercial Ethics and Youth Entrepreneurship Development: A Special Reference to National Education Policy-2020

सागर सिंह सिरोला[1], गगन दीप सिंह[2]

[1]शोध अध्येता, शिक्षाशास्त्र विद्याशाखा, शिक्षक शिक्षा विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, लाल बहादुर शास्त्री राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय हल्दूचौड़ (263139) नैनीताल, उत्तराखण्ड।

[2]शोधार्थी, वाणिज्य विभाग, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, इन्दिरा प्रियदर्शिनी राजकीय महिला स्नातकोत्तर वाणिज्य महाविद्यालय हल्द्वानी (263139) नैनीताल, उत्तराखण्ड।

शोध सारांशिका (Abstract)

यह शोध प्रपत्र श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्शों का शैक्षिक आचरण, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता के विकास पर प्रभाव का विश्लेषण राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में प्रस्तुत करता है। गुरु नानक देव जी की शिक्षाएँ—"नाम जपो", "कीरत करो", "वंड छको"—न केवल आध्यात्मिक साधना का मार्गदर्शन करती हैं, अपितु शिक्षा, व्यवसाय एवं समाज में नैतिकता, सेवा तथा सामाजिक उत्तरदायित्व का ठोस आधार भी स्थापित करती हैं। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन का मुख्य उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि श्री गुरु नानक देव के आर्थिक एवं नैतिक आदर्श वर्तमान समय में शिक्षक, शिक्षार्थियों एवं युवा उद्यमियों के आचरण, सोच व व्यवहार को किस प्रकार प्रभावित करते हैं तथा राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के सन्दर्भ में इन

आदर्शों की प्रासंगिकता कितनी है। इसके अतिरिक्त वे मूल्य-आधारित शिक्षा, वाणिज्यिक नैतिकता एवं उद्यमशीलता के विकास में किस प्रकार सहायक हो सकते हैं। प्रस्तुत शोध अध्ययन हेतु परिपूर्ण किए गए सर्वेक्षण के परिणामों के अनुसार, अधिकांश उत्तरदाताओं का यह मत है कि नैतिक मूल्य शिक्षा का अनिवार्य अंग होना चाहिए तथा श्री गुरु नानक देव जी के विचार वर्तमान समय में भी चरित्र निर्माण, ईमानदार व्यापार व सामाजिक उत्तरदायित्वयुक्त उद्यमिता के लिए अत्यन्त प्रेरणादायक हैं। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 में भी मूल्य-आधारित शिक्षा, कौशल विकास एवं उद्यमिता को प्राथमिकता दी गई है, जो श्री गुरु नानक देव जी के आदर्शों से गहनतापूर्वक जुड़ी हुई हैं। निष्कर्षतः, यह शोध अध्ययन इंगित करता है कि नैतिकता, आध्यात्मिकता एवं उद्यमशीलता का समन्वय भारतीय युवाओं में सकारात्मक परिवर्तन लाने में सक्षम है तथा श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धान्त वर्तमान समय के सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक सन्दर्भ में अत्यन्त व्यावहारिक एवं आवश्यक हैं।

संकेताक्षर (Key Words): श्री गुरु नानक देव जी, नैतिक मूल्य, वाणिज्यिक नैतिकता, युवा उद्यमिता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020।

प्रस्तावना (Preface)

मानव सभ्यता के विकास में नैतिक मूल्यों, आध्यात्मिक चिन्तन एवं आर्थिक दृष्टिकोण की अत्यन्त महत्वपूर्ण भूमिका रही है। जब समाज दिशाहीनता की ओर अग्रसर होता है, तब कोई महान विचारक, सन्त अथवा धर्म प्रवर्तक युग को नई दिशा प्रदान करता है। ऐसे ही युगनायकों में श्री गुरु नानक देव जी का नाम उच्च आदर के साथ लिया जाता है, जिनकी शिक्षाएँ आज भी सामाजिक, शैक्षिक, आर्थिक एवं नैतिक जीवन को आलोकित करती हैं। भारत की आध्यात्मिक एवं ज्ञान परम्परा में श्री गुरु नानक देव जी का स्थान अत्यन्त विशिष्ट एवं विशद है। वे न केवल एक महान सन्त, अपितु एक ऐसे समाज-सुधारक, आर्थिक विचारक एवं नैतिक शिक्षाविद के रूप में स्मरण किए जाते हैं, जिनकी शिक्षाएँ आज भी सार्वकालिक प्रासंगिकता रखती हैं। उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त — "नाम जपो", "कीरत करो", "वंड छको"[1], केवल आध्यात्मिक साधना नहीं, वरन व्यावहारिक जीवन के लिए भी एक ठोस आधार प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान समय में जब भारतीय समाज उन्नत प्रौद्योगिकी विकास के साथ-साथ मूल्य-संकट की स्थिति से ग्रसित है, तब ऐसे में श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्शों की पुनर्व्याख्या अत्यन्त आवश्यक प्रतीत होती है। विशेष रूप से शिक्षा जगत में इन मूल्यों का समावेश विद्यार्थियों के शैक्षिक आचरण, सामाजिक दायित्व-बोध एवं उद्यमशील प्रवृत्ति को दिशा प्रदान कर सकता है। समकालीन समय में नैतिक मूल्य आधारित "वाणिज्यिक नैतिकता" एवं "युवा उद्यमिता" की अवधारणाएँ वैश्विक स्तर पर मान्यता प्राप्त कर रही हैं, जिनकी जड़ें भारतीय परम्परागत चिन्तन में विद्यमान हैं।

समकालीन राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 ने जहाँ मूल्य-आधारित शिक्षा, उद्यमिता एवं कौशल विकास पर बल दिया है, वहीं यह नीति श्री गुरु नानक देव जी जैसे महापुरुषों के विचारों से प्रेरणा लेने की आवश्यकता को भी इंगित करती है। अतएव प्रस्तुत शोध अध्ययन का अभीष्ट उद्देश्य यह विश्लेषित करना है कि श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्शों का प्रभाव वर्तमान समय के शिक्षार्थियों, शिक्षकों एवं नव-उद्यमियों पर किस प्रकार से परिलक्षित हो सकता है तथा वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के आलोक में इन आदर्शों की प्रासंगिकता क्या है। प्रस्तुत शोध अध्ययन एक सर्वेक्षणात्मक पद्धति पर आधारित है, जिसके माध्यम से यह समझने का प्रयास किया गया है कि नैतिकता एवं आध्यात्मिक चेतना पर आधारित शिक्षा एवं व्यवसाय वर्तमान सामाजिक परिप्रेक्ष्य

[1] श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, श्री राग : अंग 45, अनुवाद: शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर साहिब।

में कितनी सार्थक सिद्ध हो सकती है। इसके अतिरिक्त प्रस्तुत शोध अध्ययन में यह भी विश्लेषित किया गया है कि क्या गुरु नानक देव जी के सिद्धान्तों का व्यवहारिक अन्वय आधुनिक भारत में उद्यमिता और नीति निर्माण को प्रभावित कर सकता है? इस प्रकार यह शोध अध्ययन यह सन्दर्भित करेगा कि मूल्य-आधारित शिक्षण एवं नैतिक उद्यमिता को बढ़ावा देने में श्री गुरु नानक देव जी के आदर्श वर्तमान सन्दर्भ में कितने व्यावहारिक व प्रासंगिक हैं।

शोध अध्ययन की आवश्यकता एवं औचित्य (Need and Rationale of the Study)

वर्तमान वैश्विक परिदृश्य में शिक्षा, व्यापार एवं उद्यमिता के क्षेत्र में नैतिक मूल्यों एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण की उपेक्षा एक गम्भीर चिन्ता का विषय बन चुकी है। उपभोक्तावादी प्रवृत्तियाँ, लाभ केन्द्रित व्यापारिक सोच तथा स्वार्थ प्रधान शिक्षा व्यवस्था समाज में असमानता, मूल्यहीनता एवं नैतिक विचलन को जन्म दे रही हैं। ऐसे समय में श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्श, जो 'नाम जपो', 'कीरत करो' एवं 'वंड छको' जैसे मूलभूत सिद्धांतों पर आधारित हैं, आज भी एक जीवन्त एवं व्यावहारिक मार्गदर्शन प्रस्तुत करते हैं। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 ने भी भारत की सांस्कृतिक परम्परा एवं नैतिक शिक्षाओं को पुनर्स्थापित करने की दिशा में प्रयास आरम्भ किए हैं। इस नीति में उद्यमिता, नैतिक शिक्षा तथा समाजोन्मुखता को विशेष स्थान दिया गया है, जो श्री गुरु नानक देव जी के विचारों से सीधा संवाद स्थापित करता है। अतएव यह आवश्यक प्रतीत होता है कि इन मूल्यों की वर्तमान शिक्षा व्यवस्था, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता में व्यावहारिक भूमिका को प्रत्यक्ष रूप से समझने हेतु एक सर्वेक्षणात्मक शोध अध्ययन किया जाए। इस सन्दर्भ में प्रस्तुत शोध अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है कि क्या भारतीय युवाओं में नैतिक उद्यमिता की चेतना जाग्रत हो रही है और क्या श्री गुरु नानक देव जी के विचार उन्हें प्रेरणा देने में सक्षम हैं। साथ ही यह अध्ययन, नीति-निर्माताओं को यह दृष्टिकोण प्रदान कर सकेगा कि किस प्रकार आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक मूल्यों को आधुनिक शिक्षा एवं व्यावसायिक प्रशिक्षण में एकीकृत किया जा सकता है।

शोध अध्ययन के उद्देश्य (Objectives of the Research Study)

प्रस्तुत शोध का मुख्य उद्देश्य यह समझना है कि श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्शों का शैक्षिक, वाणिज्यिक तथा उद्यमिता के क्षेत्र में क्या प्रभाव पड़ता है, विशेषतः राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के परिप्रेक्ष्य में। इस प्रमुख ध्येय को स्पष्ट करने हेतु निम्नलिखित उप-उद्देश्यों को निर्धारित किया गया है, जिनका विवरण क्रमशः इस प्रकार है :

1. यह विश्लेषण करना कि श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं आर्थिक विचार वर्तमान शैक्षिक आचरण को किस प्रकार प्रभावित कर सकते हैं।
2. यह समझना कि वाणिज्यिक नैतिकता के क्षेत्र में श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धान्त किस सीमा तक व्यावहारिक हैं।
3. यह मूल्यांकन करना कि क्या श्री गुरु नानक देव जी के विचार आधुनिक युवा उद्यमियों के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं।
4. यह परीक्षण करना कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में निहित नैतिक एवं उद्यमिता सम्बन्धी लक्ष्यों की पूर्ति श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धान्तों द्वारा किस प्रकार की जा सकती है।
5. सर्वेक्षण के माध्यम से विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं युवा उद्यमियों की सोच, समझ व व्यवहार में नैतिकता, उद्यमिता और आध्यात्मिक मूल्यों की उपस्थिति का आंकलन करना।

शोध प्रकल्पना (Research Hypothesis)

प्रस्तुत शोध अध्ययन के उद्देश्यों की पूर्ति तथा शोध की दिशा को सुव्यवस्थित करने हेतु कुछ परीक्षण योग्य परिकल्पनाएँ निर्मित की गयी हैं, जो श्री गुरु नानक देव जी के आदर्शों के प्रभाव का आंकलन करने में सहायक सिद्ध होंगी। इनका विवरण क्रमशः इस प्रकार से है :

मुख्य प्रकल्पना (Main Hypothesis)

H_1: श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं आर्थिक आदर्शों का शैक्षिक आचरण, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।

H_0 (शून्य परिकल्पना): श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं आर्थिक आदर्शों का शैक्षिक आचरण, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

उप-परिकल्पनाएँ (Sub-Hypotheses)

$H_1.1$: श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक विचार शिक्षकों एवं शिक्षार्थियों के आचरण को प्रभावित करते हैं।

$H_1.2$: युवा उद्यमी अपने व्यवसाय में नैतिक निर्णय लेने हेतु श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धान्तों से प्रेरणा प्राप्त करते हैं।

$H_1.3$: राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित नैतिक शिक्षा एवं उद्यमिता के लक्ष्यों की पूर्ति में श्री गुरु नानक देव जी के विचार सहायक हो सकते हैं।

$H_1.4$: आध्यात्मिक चेतना के साथ जुड़ी उद्यमिता अधिक सामाजिक रूप से उत्तरदायी होती है।

सम्बन्धित साहित्य का पुनरावलोकन (Review of Related Literature)

- सिरोला, एस0 (2021), द्वारा "श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन" किया गया। इस शोध का मुख्य उद्देश्य गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान समय में प्रासंगिकता का विश्लेषण करना एवं उनके विचारों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में लागू करने की संभावनाओं का पता लगाना था। इस अध्ययन में यह पाया गया कि गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचार वर्तमान समय में भी प्रासंगिक हैं तथा शिक्षा प्रणाली में सुधार के लिए महत्वपूर्ण योगदान दे सकते हैं। उनके विचारों को आधुनिक शिक्षा प्रणाली में लागू करने से विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण एवं नैतिक मूल्यों में सुधार हो सकता है।
- मेहता, एस0. (2021), द्वारा "Spirituality and Business: Indian Approaches" शीर्षक पर शोध अध्ययन किया गया। इस शोध अध्ययन में भारतीय धार्मिक परम्पराओं, विशेषकर सिख, जैन एवं वैदिक दृष्टिकोणों से व्यापार नैतिकता पर विचार-विमर्श किया गया है तथा श्री गुरु नानक देव जी के विचारों को व्यवसाय में नैतिक मूल्य स्थापना का माध्यम बताया गया है।
- शर्मा, आर0. (2020), द्वारा "राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में नैतिक शिक्षा की भूमिका" का अध्ययन किया गया। यह शोधपत्र नई शिक्षा नीति में नैतिकता के पुनःस्थापन को रेखांकित करता है। इसमें गुरु-शिष्य परम्परा एवं भारतीय जीवन मूल्यों की प्रासंगिकता को भी प्रतिपादित किया गया है।

- कुमार, ए0. (2019), द्वारा "Youth Entrepreneurship and Indian Ethical Traditions" शीर्षक पर लेख प्रस्तुत किया गया। यह लेख युवाओं में नैतिक उद्यमिता को बढ़ावा देने हेतु भारतीय विचारधाराओं की उपयोगिता को उजागर करता है। इसमें विशेष रूप से श्री गुरु नानक देव जी के विचारों को वर्तमान के स्टार्टअप युग के लिए प्रासंगिक बताया गया है।
- सिंह, बलबीर (2018), द्वारा "गुरु नानक देव जी का नैतिक दर्शन और सामाजिक चेतना" पर शोध कार्य किया गया। इस शोध कार्य में श्री गुरु नानक देव जी के उपदेशों में निहित सामाजिक न्याय, समानता एवं करुणा के सिद्धान्तों का विश्लेषण किया गया है। उक्त शोध में शोधकर्ता द्वारा यह स्थापित किया है कि ये आदर्श वर्तमान समय के शैक्षिक एवं व्यापारिक जगत में नैतिक आधारशिला प्रदान कर सकते हैं।
- कौर, एम0. (2017) द्वारा "Entrepreneurial Ethics and Sikh Teachings" शोध पत्र प्रस्तुत किया गया। इस लेख में सिक्ख गुरुजनों, विशेषकर श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक विचारों जैसे 'कीरत करो' व 'वंड छको' का युवा व्यवसायियों पर प्रभाव विश्लेषण किया गया है। यह लेख बताता है कि यह सिद्धान्त सामाजिक उत्तरदायित्वयुक्त उद्यमिता को बढ़ावा देते हैं।

शोध अभिकल्प एवं प्रविधि (Research Design and Methodology)

प्रस्तुत शोध हेतु उपयुक्त शोध प्रविधि, उपकरण एवं सांख्यिकीय प्रणालियों को अपनाते हुए प्रदत्तों का व्यवस्थित संकलन एवं विवेचन किया गया है। प्रस्तुत शोध हेतु निम्नांकित शोध अभिकल्प का निर्माण किया गया है:

शोध की प्रकृति (Nature of the Study)

यह शोध एक वर्णनात्मक एवं विश्लेषणात्मक (Descriptive and Analytical) स्वरूप का शोध अध्ययन है, जो गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार के दृष्टिकोण को सम्मिलित करता है। इसमें सर्वेक्षण के माध्यम से विचारों, मान्यताओं एवं व्यवहारों का अध्ययन किया गया है। यह अध्ययन नैतिकता, उद्यमिता एवं शैक्षिक मूल्यों के अन्तर्सम्बन्धों के विवेचन हेतु सम्पादित किया गया है।

शोध विधि (Method Used)

प्रस्तुत अध्ययन में सर्वेक्षण पद्धति (Survey Method) को अपनाया गया है, जिसमें प्रश्नावली उपकरण (Questionnaire Tool) के माध्यम प्रदत्तों का संकलन किया गया है।

लक्षित समष्टि (Target Population)

प्रस्तुत शोध अध्ययन के अन्तर्गत लक्षित समष्टि हेतु उत्तराखण्ड राज्य के कुमाऊँ मण्डल स्थित नैनीताल जनपद के हल्द्वानी नगर में निवास करने वाले विभिन्न शिक्षक, शिक्षार्थी एवं युवा उद्यमियों का चयन किया गया है। शोध अन्वेषकों द्वारा यह जनसंख्या सामाजिक, शैक्षिक एवं व्यावसायिक दृष्टि से विविधतापूर्ण एवं नैतिक संवेदनशीलता के मूल्यांकन हेतु उपयुक्त मानी गयी है।

प्रतिदर्श (Sample)

प्रस्तुत शोध हेतु **सुविधाजन्य प्रतिदर्शन चयन विधि** (Convenient Sampling Technique) द्वारा कुल 100 उत्तरदाताओं को चयनित किया गया है। इसमें एम0 बी0 राजकीय स्नातकोत्तर महाविद्यालय एवं उत्तराखण्ड मुक्त विश्वविद्यालय के कुल 20 शिक्षक, 50 शिक्षार्थी एवं स्थानीय विपणन क्षेत्र के 30 युवा उद्यमियों को सम्मिलित किया गया है।

प्रदत्त संग्रहण उपकरण (Tool of Data Collection)

प्रस्तुत शोध हेतु कुल 20 प्रश्नों की Likert Scale आधारित प्रश्नावली का निर्माण किया गया है, जिसमें उत्तरदाता पाँच विकल्पों में से किसी एक को चुनते हैं:

[1] पूर्णतः सहमत, [2] सहमत, [3] तटस्थ, [4] असहमत, [5] पूर्णतः असहमत।

प्रदत्त विश्लेषण की विधि (Method of Data Analysis)

प्रस्तुत शोध हेतु प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण प्रतिशत (%), माध्य (Mean), मानक विचलन (Standard Deviation) एवं रेखाचित्र (Chart) के माध्यम से किया गया है। साथ ही, कुछ उत्तरों का निष्कर्षात्मक व विवेचनात्मक अध्ययन भी किया गया है।

प्रश्नावली निर्माण (Construction of Questionnaire)

प्रस्तुत शोध में सूचनाओं के संकलन हेतु शोधकर्ता द्वारा एक स्वनिर्मित प्रश्नावली का प्रयोग किया गया है, जो Likert Scale पर आधारित है। इसमें उत्तरदाताओं को प्रत्येक कथन के लिए पाँच विकल्प प्रदान किए गए:

[1] पूर्णतः सहमत, [2] सहमत, [3] तटस्थ, [4] असहमत, [5] पूर्णतः असहमत।

इस प्रश्नावली का उपयोग विद्यार्थियों, शिक्षकों एवं युवा उद्यमियों के मध्य किया गया। यह प्रश्नावली कुल 20 कथनों पर आधारित है, जिन्हें विषयानुसार निम्नलिखित चार खण्डों में वर्गीकृत किया गया है।

खण्ड–1: शैक्षिक आचरण एवं नैतिक मूल्य (Educational Conduct & Moral Values)

1. मैं मानता/मानती हूँ कि नैतिक मूल्य शिक्षा प्रणाली का अनिवार्य अंग होने चाहिए।
2. गुरु नानक देव जी के विचार विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण में सहायक हो सकते हैं।
3. वर्तमान शिक्षा प्रणाली में नैतिक शिक्षा की मात्रा पर्याप्त है।
4. क्या गुरु नानक देव जी के आदर्श आज के विद्यार्थियों के जीवन में भी प्रासंगिक हैं।
5. शिक्षक यदि नैतिकता का पालन करें, तो विद्यार्थी भी नैतिक बनते हैं।

खण्ड–2: वाणिज्यिक नैतिकता (Commercial Ethics)

1. आधुनिक व्यापार प्रणाली में नैतिकता की आवश्यकता है।
2. गुरु नानक देव जी के 'कीरत करो' एवं 'वंड छको' सिद्धान्त व्यापार नैतिकता में सहायक हैं।
3. ईमानदारी से व्यापार करने वाले उद्यमी समाज में आदर्श बन सकते हैं।

4. आज का युवा अधिक लाभ के लिए नैतिकता से समझौता कर रहा है।
5. धार्मिक मूल्यों पर आधारित व्यापार समाज में सकारात्मक प्रभाव डालता है।

खण्ड–3: युवा उद्यमिता एवं राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 (Youth Entrepreneurship & NEP–2020)

1. नैतिकता-आधारित उद्यमिता आज के समय में भी सम्भव है।
2. गुरु नानक देव जी के आदर्श युवा उद्यमियों को प्रेरणा दे सकते हैं।
3. राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में नैतिक शिक्षा एवं उद्यमिता को सही स्थान दिया गया है।
4. आध्यात्मिक दृष्टिकोण से संचालित उद्यमी अधिक सामाजिक उत्तरदायी होते हैं।
5. युवाओं में नैतिक उद्यमिता की भावना को बढ़ावा देना आवश्यक है।

खण्ड–4: सार्विक मूल्यांकन (Overall Evaluation)

1. नैतिकता एवं उद्यमिता का संयोजन आज की आवश्यकता है।
2. गुरु नानक देव जी की शिक्षाएँ सभी वर्गों के लिए मार्गदर्शक हैं।
3. नैतिक शिक्षा के बिना उद्यमिता टिकाऊ नहीं हो सकती।
4. आधुनिक शिक्षा प्रणाली में आध्यात्मिकता की भूमिका घटती जा रही है।
5. यदि गुरु नानक देव जी के आदर्शों को शिक्षा नीति में लागू किया जाए, तो समाज में सकारात्मक परिवर्तन आ सकते हैं।

प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या (Data Analysis and Interpretation)

प्रस्तुत शोध हेतु निर्मित की गई 20 बिन्दुओं की प्रश्नावली के उत्तर कुल 100 उत्तरदाताओं से प्राप्त किए गए हैं, जिनमें 20 शिक्षक, 50 शिक्षार्थी एवं 30 युवा उद्यमी सम्मिलित थे। इन उत्तरों का विश्लेषण Likert Scale के अनुसार पाँच श्रेणियों में किया गया है, जिसका विवरण क्रमशः इस प्रकार से है:

प्रश्नावली आधारित प्रमुख प्रश्नों का विश्लेषण:

प्रश्न संख्या	कथन	पूर्णतः सहमत	सहमत	तटस्थ	असहमत	पूर्णतः असहमत
प्र0 01.	नैतिक मूल्य शिक्षा का अनिवार्य अंग हैं।	60%	25%	10%	4%	1%
प्र0 02.	गुरु नानक देव जी के विचार चरित्र निर्माण में सहायक है।	55%	30%	10%	3%	2%
प्र0 07.	'कीरत करो' व्यापार नैतिकता में सहायक है।	50%	32%	10%	5%	3%
प्र0 11.	नैतिकता-आधारित उद्यमिता सम्भव है।	40%	38%	12%	7%	3%

प्र0 13.	NEP-2020 में नैतिक शिक्षा और उद्यमिता को स्थान मिला है।	30%	40%	20%	7%	3%
प्र0 20.	गुरु नानक जी के आदर्शों से समाज में सुधार सम्भव है।	65%	25%	6%	3%	1%

मुख्य प्रवृत्तियाँ (Key Trends):

- 85% उत्तरदाता मानते हैं कि नैतिक मूल्य शिक्षा का अनिवार्य भाग होना चाहिए।
- श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं सामाजिक सिद्धान्तों को अधिकांश शिक्षक, शिक्षार्थी व उद्यमियों ने अत्यन्त प्रभावशाली माना।
- लगभग 78% उत्तरदाताओं ने 'कीरत करो' जैसे सिक्ख सिद्धान्तों को व्यावसायिक नैतिकता में उपयोगी माना।
- NEP–2020 के विषय में 70% से अधिक उत्तरदाताओं ने सहमति जताई, परन्तु 20% तटस्थ रहे — यह इसकी जानकारी को और अधिक प्रसारित करने की आवश्यकता को दर्शाता है।
- युवा उद्यमिता तथा नैतिकता का समन्वय उत्तरदाताओं के दृष्टिकोण में सकारात्मक रूप में सामने आया।

प्रकल्पना परीक्षण (Hypothesis Check):

H_1: "गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं आर्थिक आदर्शों का शैक्षिक आचरण, वाणिज्यिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता पर सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।"

✔ प्राप्त प्रदत्तों के आधार पर यह प्रकल्पना सत्य प्रतीत होती है, क्योंकि अधिकांश उत्तरदाता नैतिकता एवं आध्यात्मिकता के प्रभाव को स्वीकार करते हैं।

इस प्रकार प्राप्त प्रदत्तों के विश्लेषण से यह स्पष्ट होता है कि उत्तरदाताओं का बहुमत श्री गुरु नानक देव जी के नैतिक एवं आर्थिक सिद्धान्तों को शैक्षिक आचरण, व्यावसायिक नैतिकता एवं युवा उद्यमिता के लिए अत्यन्त उपयोगी एवं प्रासंगिक मानता है। अतएव वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को स्वीकार किया जाता है एवं शून्य परिकल्पना (H_0) अस्वीकार किया जाता है।"

निष्कर्ष एवं सुझाव (Findings and Suggestions)

निष्कर्ष (Conclusion):

प्रस्तुत सर्वेक्षणात्मक शोध अध्ययन के माध्यम से यह स्पष्ट हुआ कि श्री गुरु नानक देव जी के आर्थिक एवं नैतिक आदर्श आधुनिक शिक्षा प्रणाली, वाणिज्यिक नैतिकता तथा युवा उद्यमिता के क्षेत्र में आज भी अत्यन्त प्रासंगिक हैं। उत्तरदाताओं का बहुमत इस मत से सहमत था कि नैतिक मूल्य शिक्षा का अनिवार्य अंग होने चाहिए तथा श्री गुरु नानक देव जी के सिद्धान्त विद्यार्थियों के चरित्र निर्माण, ईमानदार व्यापार एवं सामाजिक उत्तरदायित्वपूर्ण उद्यमिता के लिए प्रेरणास्रोत बन सकते हैं। विशेष रूप से 'कीरत करो', 'नाम जपो' एवं 'वंड छको' जैसे सिद्धान्तों को उत्तरदाताओं ने केवल धार्मिक नहीं, अपितु व्यावहारिक एवं नैतिक आधार मानकर स्वीकार किया। साथ ही, यह भी स्पष्ट हुआ कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में निहित नैतिक शिक्षा एवं उद्यमिता के प्रावधान, श्री गुरु नानक देव जी के आदर्शों के साथ समन्वय स्थापित कर सकते हैं। इस प्रकार वैकल्पिक परिकल्पना (H_1) को स्वीकार किया

गया एवं यह निष्कर्ष प्राप्त हुआ कि नैतिकता एवं आध्यात्मिक चेतना आधारित शिक्षा व व्यवसाय आज के भारत में न केवल सम्भव है, बल्कि आवश्यक भी है।

सुझाव (Suggestions):

1. विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के पाठ्यक्रम में नैतिक शिक्षा को व्यवहारिक रूप में सम्मिलित किया जाए, जिसमें गुरु नानक देव जी के विचारों का समावेश हो।
2. व्यावसायिक प्रशिक्षण (Vocational Training) में नैतिक निर्णय-निर्माण, सामाजिक उत्तरदायित्व एवं सेवा भावना पर बल दिया जाए।
3. NEP–2020 के अन्तर्गत नैतिक शिक्षा के कार्यान्वयन हेतु शिक्षकगण को भी नियमित रूप से नैतिक प्रशिक्षण (value education workshops) दिए जाएं।
4. युवा उद्यमियों को नैतिक नेतृत्व (Ethical Leadership) व सामाजिक नवाचार (Social Innovation) की ओर प्रेरित करने हेतु राज्य/राष्ट्रीय स्तर पर श्री गुरु नानक देव जी की शिक्षाओं पर आधारित विचार-गोष्ठियाँ एवं संवाद सत्र आयोजित किए जाएँ।
5. शोध निष्कर्षों को नीति-निर्माताओं एवं शैक्षिक योजनाकारों तक पहुँचाया जाए, ताकि भारतीय ज्ञान परम्परा के आदर्शों को वर्तमान नीति में जीवन्त रूप से जोड़ा जा सके।

सन्दर्भ:

1. कौर, एम. (2017), Entrepreneurial Ethics and Sikh Teachings, International Journal of Sikh Studies, 9(1), 41–50.
2. कुमार, ए. (2019), Youth Entrepreneurship and Indian Ethical Traditions, Journal of Social Innovation, 5(2), 55–65.
3. गुरचरण, एस. (2015), सिख धर्म में सामाजिक न्याय की अवधारणा। चंडीगढ़ : गुरु गोविंद सिंह अध्ययन केन्द्र प्रकाशन।
4. मेहता, एस. (2021), Spirituality and Business: Indian Approaches, नयी दिल्ली: सेज इंडिया।
5. मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन, (2020), राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020। भारत सरकार, शिक्षा मंत्रालय, नई दिल्ली।
6. नारायण, वी. (2016), भारतीय शिक्षा में नैतिक मूल्यों का पुनर्स्थापन। वाराणसी: काशी विद्यापीठ प्रकाशन।
7. शर्मा, आर. (2020), Role of Moral Education in NEP–2020, Journal of Indian Education, 46(3), 25–33.
8. सिरोला, एस0 एस0 (2021), श्री गुरु नानक देव जी के शिक्षा विचारों की वर्तमान सन्दर्भ में प्रासंगिकता का अध्ययन, श्रीनगर गढ़वाल : शिक्षाशास्त्र विभाग, हे0नं0ब0 गढ़वाल केन्द्रीय विश्वविद्यालय, श्रीनगर गढ़वाल (उत्तराखण्ड)।
9. सिंह, बलबीर (2018), गुरु नानक देव जी का नैतिक दर्शन और सामाजिक चेतना। पटियाला: पंजाबी विश्वविद्यालय प्रकाशन।
10. श्री गुरु ग्रन्थ साहिब, अनुवाद: शिरोमणि गुरुद्वारा प्रबंधक कमेटी, अमृतसर। (उद्धरण : श्री राग, अंग 45)